ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

राजनीतिक प्रतिनिधित्व और अन्य पिछड़ा वर्ग : गोरखपुर जनपद में 16वीं लोकसभा चुनाव का मूल्यांकन

बैद्यनाथेश्वर जायसवाल, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारांश

स्वतंत्र भारत के चुनावी इतिहास में वर्ष 2014 का 16वां लोकसभा चुनाव एक युगांतरकारी घटना के रूप में दर्ज है, जिसने न केवल राष्ट्रीय स्तर पर सत्ता परिवर्तन किया, बल्कि उत्तर प्रदेश जैसे राजनीतिक रूप से जटिल और संवेदनशील राज्य में जाति, धर्म और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के अंतर्संबंधों को भी मौलिक रूप से पुनर्परिभाषित किया। प्रस्तुत शोध रिपोर्ट गोरखपुर जनपद के विशेष संदर्भ में 16वीं लोकसभा चुनाव का गहन सांख्यिकीय और समाजशास्त्रीय मूल्यांकन प्रस्तुत करती है। इस अध्ययन का मुख्य केंद्र बिंदु अन्य पिछड़ा वर्ग का राजनीतिक प्रतिनिधित्व, उनका बदलता मतदान व्यवहार और हिंदुत्व की राजनीति के साथ उनके एकीकरण का सूक्ष्म विश्लेषण करना है। गोरखपुर, जो ऐतिहासिक रूप से गोरखनाथ मठ के सांस्कृतिक–धार्मिक प्रभाव और तीव्र जातीय गोलबंदी का केंद्र रहा है, वहां 2014 के चुनावों में बहुजन समाज पार्टी और समाजवादी पार्टी की पारंपरिक 'मंडल' (जाति आधारित) राजनीति पर भारतीय जनता पार्टी की 'कमंडल' (हिंदुत्व आधारित) और नवोन्मेषी 'सोशल इंजीनियरिंग' की रणनीति भारी पड़ी। इस शोध में यह विश्लेषित किया गया है कि कैसे भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने गैर–यादव अन्य पिछड़ा वर्ग जातियों विशेषकर निषाद, सैंथवार, कुर्मी, और मौर्य को हिंदुत्व के व्यापक वैचारिक छाते के नीचे लाकर अपने जनाधार का अभूतपूर्व विस्तार किया। इसके साथ ही, प्रसिद्ध राजनीतिक विचारकों जैसे क्रिस्टोफ जाफरलोट और सुधा पई के सिद्धांतों विशेषकर रोजमर्रा की सांप्रदायिकता और 'सबाल्टर्न हिंदुत्व' के परिप्रेक्ष्य में गोरखपुर के चुनावी परिणामों की व्याख्या की गई है। चुनावी आंकड़ों, जनसांख्यिकीय संरचना और सूक्ष्म–स्तरीय विधानसभा क्षेत्रों के विश्लेषण के माध्यम से यह रिपोर्ट स्पष्ट करती है कि 2014 में गोरखपुर में राजनीतिक प्रतिनिधित्व का स्वरूप किस प्रकार विखंडित और एक नई अस्मिता के तहत पुनर्गठित हुआ।

मुख्य शब्द : 16वीं लोकसभा चुनाव, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, अन्य पिछड़ा वर्ग, गोरखपुर जनपद, योगी आदित्यनाथ, सोशल इंजीनियरिंग, सबाल्टर्न हिंदुत्व।

प्रस्तावना और राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य

भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में वर्ष 2014 का आम चुनाव (16वीं लोकसभा) कई मायनों में एक मील का पत्थर और ऐतिहासिक विभाजक रेखा साबित हुआ। भारत निर्वाचन आयोग के आंकड़ों के अनुसार, 7 अप्रैल 2014 से 12 मई 2014 तक नौ चरणों में संपन्न हुए इस चुनाव में लगभग 83.4 करोड़ (834 मिलियन) पंजीकृत मतदाताओं ने हिस्सा लिया, जो उस समय तक दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक चुनाव था। इस चुनाव में 66.40% का ऐतिहासिक मतदान दर्ज किया गया, जिसने राजनीतिक भागीदारी के नए कीर्तिमान स्थापित किए। राष्ट्रीय स्तर पर इस चुनाव के परिणाम स्वरूप भारतीय जनता पार्टी ने 31% वोट शेयर के साथ 282 सीटें जीतकर तीन दशकों के बाद पहली बार किसी एक राजनीतिक दल के लिए पूर्ण बहुमत हासिल किया, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस मात्र 44 सीटों पर सिमट गई । इस प्रचंड राष्ट्रीय विजय का मुख्य मार्ग उत्तर प्रदेश से होकर गुजरा, जहां राज्य की 80 लोकसभा सीटों में से भाजपा ने 71 सीटों पर प्रत्यक्ष विजय प्राप्त की और उसकी सहयोगी पार्टी अपना दल ने 2 सीटें जीतीं। उत्तर प्रदेश में यह विजय इसलिए भी विश्लेषणात्मक महत्व रखती है क्योंकि इसने समाजवादी पार्टी (जिसने 5 सीटें जीतीं) और बहुजन समाज पार्टी (जो शून्य पर सिमट गई) जैसी क्षेत्रीय क्षत्रप पार्टियों के पारंपरिक जातीय वर्चस्व को गंभीर और संरचनात्मक चुनौती दी। उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल (पूर्वांचल) का हृदय कहे जाने वाले गोरखपुर जनपद की राजनीतिक गतिशीलता इस व्यापक बदलाव का एक सूक्ष्म और सटीक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

गोरखपुर की राजनीति का विकासक्रम ऐतिहासिक रूप से तीन अलग–अलग कालखंडों से होकर गुजरा है। पहले कालखंड में स्थानीय स्तर पर कांग्रेस का वर्चस्व और हिंदू–मुस्लिम सद्भाव देखा गयाय दूसरे चरण में तीखी जातीय प्रतिस्पर्धा और बाहुबल की राजनीति का उदय हुआय और तीसरे वर्तमान चरण में गोरखनाथ मठ के इर्द–गिर्द केंद्रित एक अत्यंत मजबूत हिंदू–आधारित राजनीतिक पहचान का निर्माण हुआ, जिसने समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की नई जातीय राजनीति को प्रत्यक्ष चुनौती दी। 2014 के चुनाव में गोरखपुर लोकसभा क्षेत्र (सामान्य) से गोरखनाथ मठ के तत्कालीन पीठाधीश्वर और

वर्तमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 1998 से अपनी जीत का सिलसिला कायम रखते हुए लगातार पांचवीं बार एकतरफा जीत दर्ज की। यह शोध रिपोर्ट इस बात का विस्तृत मूल्यांकन करती है कि 2014 के चुनाव में गोरखपुर जनपद में अन्य पिछड़ा वर्ग की जनसांख्यिकीय और राजनीतिक भूमिका क्या रही, राजनीतिक दलों ने उन्हें प्रतिनिधित्व देने के लिए क्या रणनीतियां अपनाईं, और कैसे हिंदुत्व व राष्ट्रवाद के वृहद विमर्श ने उनकी पारंपरिक जातिगत वफादारियों को विस्थापित कर दिया।

सैद्धांतिक और वैचारिक परिप्रेक्ष्य : सबाल्टर्न हिंदुत्व और रोजमर्रा की सांप्रदायिकता

गोरखपुर में अन्य पिछड़ा वर्ग के मतदान व्यवहार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के प्रश्न का विश्लेषण करने के लिए समकालीन राजनीतिक सिद्धांतों का सहारा लेना आवश्यक है। इस संदर्भ में क्रिस्टोफ जाफरलोट और सुधा पई जैसे प्रख्यात विद्वानों के शोध अत्यधिक प्रासंगिक हैं। सुधा पई और सज्जन कुमार द्वारा अपनी बहुचर्चित पुस्तक Everyday Communalism : Riots in Contemporary Uttar Pradesh में प्रतिपादित रोजमर्रा की सांप्रदायिकता का सिद्धांत उत्तर प्रदेश की समकालीन राजनीति को समझने की एक नई वैचारिक खिड़की खोलता है। इन शोधकर्ताओं के अनुसार, 2000 के दशक के बाद से उत्तर प्रदेश (विशेषकर पूर्वी यूपी के गोरखपुर और मऊ जैसे क्षेत्रों में) में बड़े पैमाने पर राज्य–व्यापी और हिंसक दंगे भड़काने के बजाय, भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने एक नई संस्थागत रणनीति अपनाई। इस यूपी मॉडल के तहत छोटी–छोटी, रोजमर्रा की घटनाओं, जैसे कि लाउडस्पीकर का उपयोग, रास्तों या भूमि का विवाद, और मवेशियों से जुड़े मुद्दे को सुनियोजित तरीके से सांप्रदायिक रंग देकर निरंतर कम–तीव्रता वाला तनाव पैदा किया गया। गोरखपुर में 2007 के दंगों और मऊ में 2005 के दंगों के बाद से ही समाज में एक गहरा मनोवैज्ञानिक ध्रुवीकरण पैदा कर दिया गया था। इस निरंतर तनाव ने हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच सामान्य बातचीत और सामाजिक मेलजोल को समाप्त कर दिया और अलगाव का एक नया सामान्य स्थापित किया। राजनीतिक प्रतिनिधित्व के संदर्भ में इसका सबसे गंभीर प्रभाव यह हुआ कि OBC जातियों के भीतर की आर्थिक और वर्गीय चिंताएं, हिंदू पहचान की रक्षा के आख्यान के पीछे गौण हो गईं।

इसके समानांतर, क्रिस्टोफ जाफरलोट का शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि 1990 के दशक में भाषाई और क्षेत्रीय आधार पर जो राजनीति अन्य पिछड़ा वर्ग के इर्द–गिर्द केंद्रित हो गई थी, वह 2014 आते–आते एक नए स्वरूप में ढल गई । जाफरलोट और अन्य विद्वानों के अनुसार, उत्तर प्रदेश में भाजपा ने सोशल इंजीनियरिंग (सामाजिक अभियांत्रिकी) की एक अत्यंत सूक्ष्म और आक्रामक रणनीति अपनाई। राज्य में समाजवादी पार्टी (यादव बहुल) और बहुजन समाज पार्टी (जाटव बहुल) की सरकारों के दौरान, गैर–यादव पिछड़े वर्गों (जैसे कुर्मी, कोइरी, निषाद, मौर्य, राजभर) और गैर–जाटव दलितों (जैसे पासी, वाल्मीकि) ने स्वयं को राजनीतिक सत्ता, संसाधनों और विकास से संरचनात्मक रूप से वंचित महसूस किया। आरएसएस और भाजपा ने इस गहरे सामाजिक असंतोष को पहचाना और इन उपेक्षित OBC तथा दलित जातियों को हिंदुत्व के ढांचे में समाहित कर लिया। इस प्रक्रिया को सुधा पई सबाल्टर्नाइजेशन या गैर–ब्राह्मणवादी हिंदुत्व के रूप में परिभाषित करती हैं, जहां निचली जातियों को यह विश्वास दिलाया गया कि वे हिंदू राष्ट्रवाद का एक अभिन्न और सम्मानित अंग हैं। 2014 के आम चुनाव में प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी द्वारा अपनी स्वयं की OBC पृष्ठभूमि को रैलियों में प्रमुखता से पेश करना इसी रणनीति का एक अहम हिस्सा था, जिसने पिछड़े वर्गों के बीच एक मजबूत मनोवैज्ञानिक जुड़ाव और प्रतिनिधित्व का भ्रम पैदा किया।

गोरखपुर जनपद की जनसांख्यिकीय रूपरेखा तथा सामाजिक–आर्थिक ताना–बाना

राजनीतिक प्रतिनिधित्व के परिदृश्य और चुनावी परिणामों की व्याख्या करने के लिए गोरखपुर जनपद की जनसांख्यिकीय और जातीय बुनावट का मात्रात्मक विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है। भारत की 2011 की आधिकारिक जनगणना के अनुसार, गोरखपुर जनपद की कुल जनसंख्या 44.40 लाख (4,440,895) है, जिसमें ग्रामीण जनसंख्या का हिस्सा 36.04 लाख और शहरी जनसंख्या का हिस्सा 8.36 लाख है।

जनसांख्यिकीय संकेतक (जनगणना 2011)	सांख्यिकीय आंकड़े
कुल जनसंख्या	4,440,895
पुरुष जनसंख्या	2,277,777
महिला जनसंख्या	2,163,118
हिंदू जनसंख्या का प्रतिशत	90.28%
मुस्लिम जनसंख्या का प्रतिशत	9.09%

ईसाई एवं सिख जनसंख्या	क्रमशः 0.22% और 0.05%
अनुसूचित जाति जनसंख्या	9,36,061 (लगभग 21.07%)
कुल साक्षरता दर	70.83: (पुरुषः 81.80%, महिलाः 59.36%)
जनसंख्या घनत्व	1,337 प्रति वर्ग किलोमीटर
स्रोतः गोरखपुर जिला जनगणना रिपोर्ट 2011	

वर्ष 2001 की तुलना में 2011 में गोरखपुर की जनसंख्या में 17.81% की वृद्धि दर्ज की गई थी। 90.28% हिंदू आबादी वाले इस जनपद में धर्म के आधार पर बहुसंख्यकवाद की राजनीति के लिए एक उर्वर जमीन हमेशा से उपलब्ध रही है। हालांकि, इस विशाल हिंदू आबादी के भीतर जातियों का एक अत्यंत जटिल और बहुस्तरीय संजाल मौजूद है, जो चुनावी राजनीति की वास्तविक दिशा तय करता है।

अन्य पिछड़ा वर्ग की जनसांख्यिकी और राजनीतिक गोलबंदी

यद्यपि 1931 के बाद से भारत में आधिकारिक जातीय जनगणना के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, किंतु विभिन्न अकादमिक शोधों, राजनीतिक दलों के आंतरिक आकलनों और पत्रकारिता आधारित सर्वेक्षणों के आधार पर यह सर्वविदित तथ्य है कि गोरखपुर जनपद में अन्य पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति का एक विशाल और निर्णायक जनसमूह निवास करता है। गोरखपुर की राजनीति में इन ओबीसी उप–समूहों का ऐतिहासिक और समकालीन राजनीतिक प्रभाव इस प्रकार हैरू

1. **निषाद और मल्लाह समुदायः** गोरखपुर और पूर्वांचल के आस–पास के क्षेत्रों में निषाद, मल्लाह, केवट, और बिंद समुदायों की कुल आबादी लगभग 23% आंकी जाती है। सामाजिक और राजनीतिक रूप से यह समुदाय सवर्णों (विशेषकर ब्राह्मणों और राजपूतों) के बाद दूसरा सबसे बड़ा जनसांख्यिकीय समूह है। इस समुदाय की संख्यात्मक शक्ति चुनाव परिणामों को निर्णायक रूप से प्रभावित करने की क्षमता रखती है। ऐतिहासिक रूप से यह समुदाय राजनीतिक हाशियाकरण का शिकार रहा है, और यही कारण है कि 2014 के चुनाव में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी दोनों ने इसी समुदाय से अपने उम्मीदवार उतारे थे ताकि इस विशाल वोट बैंक पर एकाधिकार स्थापित किया जा सके।
2. **कुर्मी और सैंथवार समुदायः** कुर्मी समुदाय ऐतिहासिक रूप से कृषि क्षेत्र में प्रभावशाली रहा है। गोरखपुर में विशेष रूप से सैंथवार समुदाय (जो कि कुर्मियों की ही एक प्रभावशाली उपजाति है) का भारी सामाजिक और राजनीतिक वर्चस्व है। 19वीं सदी के ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार, सैंथवार स्वयं को सबसे शुद्ध वंश का मानते हैं और अंतर्विवाही प्रथाओं का पालन करते हैं, जिसके कारण उन्हें अक्सर एक अलग जाति के रूप में भी देखा जाता है। पिपराइच, कैम्पियरगंज और खजनी विधानसभा क्षेत्रों में सैंथवार मतदाताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, और भारतीय जनता पार्टी ने इस समुदाय के भीतर अपनी गहरी सांगठनिक पैठ बनाई है।
3. **मौर्य, कुशवाहा और कोइरी समुदाय :** यह समुदाय भी मुख्य रूप से कृषि और बागवानी से जुड़ा रहा है। अरविंद नारायण दास जैसे समाजशास्त्रियों के अनुसार, 1950 के दशक के भूमि सुधारों के बाद बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में कोइरी और कुशवाहा समुदाय ने अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ की और एक उभरते हुए कृषक वर्ग के रूप में स्वयं को स्थापित किया। 2014 के चुनावों में, सपा और बसपा से मोहभंग होने के बाद, भाजपा ने इस समुदाय को हिंदुत्व और विकास के दोहरे आख्यान के माध्यम से अपनी ओर सफलतापूर्वक आकर्षित किया।
4. **यादव समुदाय :** उत्तर प्रदेश की कुल आबादी में यादवों का प्रतिशत लगभग 8.5% से 10% के बीच माना जाता है। समाजवादी पार्टी का यह पारंपरिक और सबसे वफादार वोट बैंक गोरखपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में भी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराता है। हालांकि, 2014 के चुनावों में भाजपा के व्यापक ध्रुवीकरण के समक्ष यह वोट बैंक अन्य ओबीसी जातियों को अपने साथ लामबंद करने में विफल रहा।

16वीं लोकसभा चुनाव (2014) : गोरखपुर संसदीय क्षेत्र का सांख्यिकीय और राजनीतिक मूल्यांकन

गोरखपुर लोकसभा क्षेत्र (सामान्य निर्वाचन क्षेत्र संख्या–64) में 12 मई 2014 को मतदान संपन्न हुआ और 16 मई 2014 को मतगणना के पश्चात् परिणाम घोषित किए गए। इस ऐतिहासिक चुनाव में गोरखपुर संसदीय क्षेत्र में कुल 19,04,498 पंजीकृत मतदाता थे (जिनमें 10,55,476 पुरुष और 8,49,022 महिलाएं थीं), जिनमें से 10,40,199 मतदाताओं (54.6%) ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। इस संसदीय क्षेत्र में मुख्य राजनीतिक मुकाबला भारतीय जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के बीच था। राजनीतिक दलों ने अपनी चुनाव रणनीति के तहत पिछड़े वर्गों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व के महत्व

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

को समझते हुए टिकटों का वितरण किया था। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार प्रमुख उम्मीदवारों का प्रदर्शन निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है:

क्र.	उम्मीदवार का नाम	राजनीतिक दल	प्राप्त वोट	वोट प्रतिशत (%)	सामाजिक वर्ग / जाति पृष्ठभूमि
1	योगी आदित्यनाथ (विजेता)	भारतीय जनता पार्टी	5,39,127	51.8%	सामान्य (राजपूत / मठ) के
2	राजमती निषाद वर्ग (निषाद)	समाजवादी पार्टी	2,26,344	21.8%	अन्य पिछड़ा
3	राम भुआल निषाद (निषाद)	बहुजन समाज पार्टी	1,76,412	17.0%	अन्य पिछड़ा वर्ग
4	अष्टभुजा प्रसाद त्रिपाठी	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	45,719	4.4%	सामान्य (ब्राह्मण)
5	राधे मोहन मिश्रा	आम आदमी पार्टी	11,873	1.1%	सामान्य (ब्राह्मण)
6	नोटा	इनमें से कोई नहीं	8,153	0.4%	लागू नहीं
7	अच्छे लाल गुप्ता	निर्दलीय	5,339	0.5%	अन्य पिछड़ा वर्ग
स्रोतः भारत निर्वाचन आयोग चुनाव परिणाम 2014					

सांख्यिकीय और राजनीतिक विश्लेषण : ओबीसी प्रतिनिधित्व की विफलता

उपरोक्त चुनावी आंकड़ों का सूक्ष्मता से मूल्यांकन करने पर गोरखपुर की राजनीति के कई महत्वपूर्ण अंतर्निहित आयाम सामने आते हैं:

प्रथम, वोटों का प्रचंड अंतर : योगी आदित्यनाथ ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी समाजवादी पार्टी की राजमती निषाद को 3,12,783 मतों के एक विशाल और ऐतिहासिक अंतर से पराजित किया। 51.8% का भारी मत प्रतिशत यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है कि उनके पक्ष में केवल पारंपरिक सवर्ण जातियों (ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ) ने ही मतदान नहीं किया, बल्कि अन्य पिछड़ा वर्ग और दलित समुदायों के एक बहुत बड़े हिस्से ने भी जातिगत सीमाओं को लांघकर भाजपा के पक्ष में मतदान किया।

द्वितीय, समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की रणनीतिक चूक : गोरखपुर की 23% निषाद आबादी को अपने पक्ष में करने की होड़ में समाजवादी पार्टी ने पूर्व मंत्री और बाहुबली नेता जमुना निषाद की पत्नी राजमती निषाद को मैदान में उतारा, जबकि बहुजन समाज पार्टी ने राम भुआल निषाद पर दांव खेला। इन दोनों दलों का उद्देश्य एक ही सजातीय वोट बैंक पर एकाधिकार स्थापित करना था। लेकिन एक ही मजबूत जाति के दो प्रभावशाली उम्मीदवारों के चुनावी मैदान में होने से निषाद वोट बैंक का बुरी तरह से क्षैतिज विभाजन हो गया। यदि सांख्यिकीय दृष्टि से समाजवादी पार्टी (2,26,344) और बहुजन समाज पार्टी (1,76,412) के कुल प्राप्त वोटों (4,02,756) को एक साथ जोड़ भी दिया जाए, तो भी यह योग योगी आदित्यनाथ को अकेले प्राप्त हुए 5,39,127 वोटों से 1,36,371 वोट कम बैठता है। यह इस बात का अकाट्य साक्ष्य है कि केवल जातीय अंकगणित और ओबीसी प्रतिनिधित्व का प्रतीकात्मक प्रलोभन 2014 की प्रचंड हिंदुत्व लहर के सामने टिक नहीं सका।

तृतीय, गोरखनाथ मठ का अति–जातीय प्रभाव : 1998 से 2017 तक गोरखपुर के सांसद रहे योगी आदित्यनाथ मात्र एक पारंपरिक राजनीतिक नेता नहीं थे। गोरखनाथ मठ के पीठाधीश्वर होने के नाते उनकी सामाजिक छवि जातियों की संकीर्ण सीमाओं से बहुत ऊपर उठकर एक समग्र और आक्रामक हिंदू रक्षक की थी। इसी अति–जातीय छवि ने सपा और बसपा के पारंपरिक जातीय समीकरणों और सोशल इंजीनियरिंग को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया। जब एक सामान्य निषाद, कुर्मी या मौर्य मतदाता 2014 में मतदान केंद्र पर गया, तो उसने अपनी जाति के उम्मीदवार को चुनने के बजाय, अपने धर्म और राष्ट्र के रक्षक के रूप में प्रचारित योगी आदित्यनाथ और नरेंद्र मोदी को वोट देना अधिक श्रेयस्कर समझा।

विधानसभा क्षेत्र–वार राजनीतिक गतिशीलता और सूक्ष्म–प्रबंधन

गोरखपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के अंतर्गत कुल पांच विधानसभा सीटें आती हैं : कैम्पियरगंज, पिपराइच, गोरखपुर शहरी, गोरखपुर ग्रामीण, और सहजनवा। इन विधानसभा क्षेत्रों के सूक्ष्म जनसांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि OBC समुदाय किस प्रकार स्थानीय राजनीति को नियंत्रित करने की क्षमता रखता है और कैसे भाजपा ने इसका सूक्ष्म–प्रबंधन किया :

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

1. **कैम्पियरगंज (विधानसभा क्षेत्र संख्या 320) :** इस क्षेत्र में कुल मतदाताओं की संख्या लगभग 3.82 लाख (3,82,642) है। यह एक ग्रामीण और कृषि आधारित मिश्रित आबादी वाला क्षेत्र है जहां सैंथवार और निषाद मतदाताओं की अत्यधिक मजबूत उपस्थिति है। भाजपा ने इस क्षेत्र में सवर्णों के साथ–साथ इन ओबीसी जातियों का सफल गठजोड़ तैयार किया।
2. **पिपराइच (विधानसभा क्षेत्र संख्या 321) :** लगभग 4.05 लाख (4,05,883) मतदाताओं वाले इस क्षेत्र में कुर्मी/सैंथवार और निषाद समुदाय बहुतायत में हैं। यद्यपि समाजवादी पार्टी ने यहां अमरेन्द्र निषाद जैसे स्थानीय नेताओं के माध्यम से पकड़ बनाने की ऐतिहासिक कोशिश की है, लेकिन भाजपा ने गैर–यादव ओबीसी गोलबंदी के जरिये यहां अपना स्थायी वर्चस्व स्थापित कर लिया।
3. **गोरखपुर शहरी (विधानसभा क्षेत्र संख्या 322) :** यह क्षेत्र योगी आदित्यनाथ का मुख्य और अभेद्य गढ़ माना जाता है, जहां लगभग 4.64 लाख (4,64,077) मतदाता निवास करते हैं। इस क्षेत्र में सवर्ण जातियों (विशेषकर कायस्थ, ब्राह्मण और क्षत्रिय) के साथ–साथ शहरी OBC वर्ग (जैसे वैश्य) का भारतीय जनता पार्टी को लगभग एकमुश्त और वैचारिक वोट प्राप्त होता है।
4. **गोरखपुर ग्रामीण (विधानसभा क्षेत्र संख्या 323) :** 4.18 लाख (4,18,787) मतदाताओं वाले इस क्षेत्र में निषाद और यादवों की भारी आबादी निवास करती है। 2014 के लोकसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी के उम्मीदवार राम भुआल निषाद ने विशेष रूप से इस विधानसभा क्षेत्र में समाजवादी पार्टी को कड़ी टक्कर देते हुए अच्छे वोट प्राप्त किए थे, जिससे निषाद वोटों का सबसे अधिक विभाजन यहीं देखने को मिला।
5. **सहजनवा (विधानसभा क्षेत्र संख्या 324) :** इस क्षेत्र में लगभग 3.77 लाख (3,77,805) मतदाता हैं। यह क्षेत्र भी सवर्ण और विभिन्न OBC जातियों का एक जटिल जनसांख्यिकीय गठजोड़ प्रस्तुत करता है।

इन पांचों विधानसभा क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के बूथ–स्तरीय मतदान प्रबंधन ने यह सुनिश्चित किया कि समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी का पारंपरिक वोट ब्लॉक पूरी तरह से टूट जाए। भाजपा की राज्य–प्रायोजित कल्याणकारी नीतियों के वादों और संघ के अत्यंत कुशल संगठनात्मक ढांचे ने पारम्परिक वोट बैंक की अवधारणा को दरकिनार करते हुए मतदाताओं से सीधा संपर्क स्थापित किया।

बांसगांव (सुरक्षित) निर्वाचन क्षेत्र से तुलनात्मक अध्ययन और सबाल्टर्न एकीकरण

गोरखपुर जनपद की राजनीतिक गतिशीलता और भाजपा की श्सोशल इंजीनियरिंगश की गहराई को पूर्ण रूप से समझने के लिए इसकी सीमा से लगे बांसगांव लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र (जो कि अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है) का तुलनात्मक अध्ययन करना आवश्यक है। 2014 के चुनावों में, संपूर्ण भारत में भाजपा ने 131 आरक्षित सीटों में से ऐतिहासिक रूप से सबसे अधिक सीटें जीती थीं, जो यह दर्शाता है कि पार्टी का जनाधार अब केवल शहरी सवर्णों तक सीमित नहीं था। बांसगांव (UP–67) लोकसभा सीट पर भाजपा ने पासी समुदाय के कमलेश पासवान को मैदान में उतारा था।

2014 लोकसभा चुनाव परिणाम : बांसगांव (SC)	राजनीतिक दल	प्राप्त वोट	वोट प्रतिशत (%)
कमलेश पासवान (विजेता)	भारतीय जनता पार्टी	4,17,959	47.61%
सदल प्रसाद (उपविजेता)	बहुजन समाज पार्टी	2,28,443	26.02%
गोरख प्रसाद पासवान	समाजवादी पार्टी	1,33,675	15.23%
संजय कुमार	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	50,675	5.77%
लालचंद प्रसाद जाटव	आजाद समाज पार्टी	9,769	1.11%
नोटा	इनमें से कोई नहीं	13,495	1.54%
स्रोतः भारत निर्वाचन आयोग 2014 निर्वाचन परिणाम			

बांसगांव का यह परिणाम इस बात की अकाट्य पुष्टि करता है कि 2014 में भाजपा का प्रभाव गोरखपुर क्षेत्र में कितना गहरा और व्यापक था। बहुजन समाज पार्टी के बेहद मजबूत कैडर बेस और मायावती के नेतृत्व के बावजूद, भाजपा के कमलेश पासवान ने 1,89,516 मतों के भारी अंतर से जीत हासिल की। यह जीत इस बात का भी स्पष्ट संकेत है कि ओबीसी की तरह ही दलितों (विशेषकर पासी जैसी गैर–जाटव जातियों) का भी भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में तीव्र ध्रुवीकरण हुआ था। जब हम गोरखपुर (सामान्य) और बांसगांव (सुरक्षित) के परिणामों को एक साथ रखकर देखते हैं, तो यह सिद्ध हो जाता है कि हिंदुत्व

का सबाल्टर्नाइजेशन केवल एक अकादमिक सिद्धांत नहीं था, बल्कि जमीन पर उतरी हुई एक कठोर चुनावी वास्तविकता थी।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बदलते प्रतिमान : मंडल पर कमंडल की विजय

2014 के लोकसभा चुनाव ने उत्तर प्रदेश की राजनीति में प्रतिनिधित्व के अर्थ को पूरी तरह से बदल कर रख दिया। 1989 के बाद से उत्तर प्रदेश की राजनीति मुख्य रूप से मंडल (सामाजिक न्याय और पिछड़ी जातियों का उभार) के इर्द–गिर्द घूमती थी। लेकिन 2014 में भाजपा ने यह साबित कर दिया कि वह मंडल की राजनीति को कमंडल (हिंदुत्व) के भीतर समाहित करने की क्षमता रखती है।

भाजपा की इस रणनीति के दो प्रमुख आधार स्तंभ थे : प्रथम, प्रतिनिधित्व का विकेंद्रीकरण : भाजपा ने जानबूझकर उन गैर–यादव ओबीसी नेताओं को आगे बढ़ाया जो अपनी जातियों में प्रभावशाली थे लेकिन सपा–बसपा की राजनीति में हाशिए पर थे। गोरखपुर में आर.पी.एन. सिंह (सैंथवार) जैसे नेताओं का बाद में भाजपा की ओर झुकाव, या मौर्य, कुशवाहा, और राजभर नेताओं को पार्टी संगठन में महत्वपूर्ण पद (जैसे जिलाध्यक्ष) देना इसी रणनीति का हिस्सा था। यह स्पष्ट था कि भाजपा केवल सवर्णों की पार्टी नहीं रहना चाहती थी। द्वितीय, रोजमर्रा की सांप्रदायिकता का संस्थागतकरण : जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, हिंदुत्व की भावना को जागृत रखने के लिए छोटे–छोटे सांप्रदायिक तनावों का उपयोग किया गया। इस प्रक्रिया ने ओबीसी मतदाताओं के मन में यह भाव उत्पन्न किया कि उनकी प्राथमिक पहचान उनकी जाति नहीं बल्कि उनका धर्म है। जब खतरा धर्म पर बताया गया, तो निषाद, कुर्मी और मौर्य मतदाता अपनी जातियों के नेताओं (राजमती निषाद या राम भुआल निषाद) को छोड़कर योगी आदित्यनाथ के पक्ष में लामबंद हो गए।

निषाद समुदाय की राजनीतिक छटपटाहट और निषाद पार्टी का उदय

2014 के लोकसभा चुनावों में यद्यपि निषाद समुदाय के दोनों प्रमुख उम्मीदवार (राजमती निषाद और राम भुआल निषाद) बुरी तरह हार गए, लेकिन इस पराजय ने इस समुदाय के भीतर राजनीतिक प्रतिनिधित्व को लेकर एक नई बेचैनी और चेतना को जन्म दिया। इस हार के बाद, निषाद और अन्य अति–पिछड़ी जातियों के प्रबुद्ध वर्ग ने यह महसूस किया कि समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी जैसे बड़े दलों में उनके स्वतंत्र राजनीतिक हितों की लगातार अनदेखी हो रही है और वे केवल चुनाव के समय एक वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किए जा रहे हैं। इसी राजनीतिक शून्यता और असंतोष की कोख से डॉ. संजय निषाद के नेतृत्व में निषाद पार्टी का राजनीतिक उभार हुआ। यद्यपि 2014 के आम चुनाव में निषाद पार्टी चुनावी परिदृश्य में कोई मुख्य राजनीतिक शक्ति नहीं थी, लेकिन 2014 के चुनाव परिणामों ने ही इस

समुदाय को अपनी स्वयं की राजनीतिक सौदेबाजी क्षमता विकसित करने के लिए प्रेरित किया। इसका सबसे स्पष्ट और तात्कालिक प्रभाव 2018 के गोरखपुर लोकसभा उपचुनाव में देखने को मिला। जब योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के बाद यह सीट रिक्त हुई, तो निषाद पार्टी के प्रवीण कुमार निषाद ने समाजवादी पार्टी के सिंबल पर चुनाव लड़ते हुए और बहुजन समाज पार्टी के समर्थन से भारतीय जनता पार्टी को पराजित कर यह सुरक्षित मानी जाने वाली सीट जीत ली थी। यह हार भाजपा के लिए एक बड़ा झटका थी और इसने यह साबित किया कि यदि मंडल की ताकतें पूरी तरह से एकजुट हो जाएं तो वे हिंदुत्व के किले में भी सेंध लगा सकती हैं। हालांकि, भाजपा के रणनीतिकारों ने इस खतरे को भांपते हुए बाद में निषाद पार्टी को अपने नेतृत्व वाले NDA गठबंधन का हिस्सा बना लिया, जो पुनः भाजपा की उसी चुस्त सोशल इंजीनियरिंग और माइक्रो–मैनेजमेंट क्षमता की पुष्टि करता है जिसके बल पर उसने 2014 का ऐतिहासिक चुनाव जीता था।

निष्कर्ष

गोरखपुर जनपद में 16वीं लोकसभा चुनाव (2014) का समग्र सांख्यिकीय और समाजशास्त्रीय मूल्यांकन केवल एक राजनीतिक दल की जीत या हार का साधारण विश्लेषण नहीं है, बल्कि यह उत्तर प्रदेश के सामाजिक–राजनीतिक ताने–बाने में आए गहरे और अपरिवर्तनीय संरचनात्मक परिवर्तनों का एक प्रामाणिक दस्तावेज है। इस विस्तृत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं :

पहला, राजनीतिक प्रतिनिधित्व की पारंपरिक अवधारणा 2014 में पूरी तरह से बदल गई। यह चुनाव इस बात का स्पष्ट प्रमाण था कि अन्य पिछड़ा वर्ग, विशेषकर गैर–यादव जातियां (निषाद, कुर्मी, मौर्य, सैंथवार), अब समाजवादी पार्टी या बहुजन समाज पार्टी की बंधुआ मतदाता नहीं रह गई हैं। भारतीय जनता पार्टी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संगठनात्मक ढांचे और सबाल्टर्न हिंदुत्व के वैचारिक आख्यान के माध्यम से

इन पिछड़े वर्गों को न केवल मनोवैज्ञानिक रूप से जोड़ा, बल्कि संगठन और टिकट वितरण में प्रतीकात्मक और वास्तविक प्रतिनिधित्व देकर अपनी राजनीतिक स्वीकार्यता को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया।

दूसरा, गोरखपुर में चुनावी परिणाम यह प्रमाणित करते हैं कि गोरखनाथ मठ की सांस्कृतिक और धार्मिक अपील जातीय सीमाओं को पार कर चुकी है। योगी आदित्यनाथ की 51.8% मतों के साथ एकतरफा जीत और विपक्षी दलों द्वारा एक ही जाति (निषाद) के उम्मीदवार उतारने के बावजूद उनकी करारी हार यह दर्शाती है कि मठ ने हिंदुत्व की एक ऐसी व्यापक छतरी प्रदान की जिसके नीचे निषाद, कुर्मी, मौर्य और पारंपरिक सवर्ण जातियां अपने आपसी अंतर्विरोधों को भुलाकर एक साथ खड़ी हो गईं।

तीसरा, पूर्वी उत्तर प्रदेश में लगातार पनप रहे निम्न–तीव्रता वाले सांप्रदायिक तनावों (रोजमर्रा की सांप्रदायिकता) ने बहुसंख्यक हिंदू पहचान को जातिगत पहचान से अधिक प्रासंगिक और हावी बना दिया। इस प्रक्रिया ने सामाजिक न्याय की मांग करने वाले मंडलवादी जातीय अंकगणित को हिंदुत्व की व्यापक लहर के सामने पूरी तरह से निष्प्रभावी कर दिया।

अंततः, 2014 के 16वीं लोकसभा चुनाव ने गोरखपुर और संपूर्ण उत्तर प्रदेश के लिए एक ऐसा राजनीतिक ब्लूप्रिंट तैयार किया जिसमें सूक्ष्म जमीनी संगठन, वैचारिक ध्रुरुवीकरण, और सामाजिक न्याय के एक नए स्वरूप का अभूतपूर्व और अत्यंत मारक मिश्रण था। इसी मिश्रण ने न केवल 2014 में, बल्कि इसके बाद के वर्षों (2017 के विधानसभा चुनाव, 2019 के लोकसभा चुनाव और 2022 के विधानसभा चुनाव) में भी उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी के निर्विवाद वर्चस्व की ठोस नींव रखी। यह चुनाव इस बात की अकाट्य गवाही है कि आधुनिक भारतीय राजनीति में राजनीतिक प्रतिनिधित्व अब केवल जाति के आधार पर टिकट देने तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह एक वृहद सांस्कृतिक–राष्ट्रवादी अस्मिता के साथ उपेक्षित सामाजिक समूहों के गहरे मनोवैज्ञानिक और वैचारिक एकीकरण का सीधा परिणाम है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. As Uttar Pradesh Goes, So Goes India | Carnegie Endowment for International Peace, https://carnegieendowment.org/research/2019/02/as-uttar-pradesh-goes-so-goes-india
2. Full article: Politics in Gorakhpur since the 1920s: the making of a safe 'Hindu' constituency, https://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/09584935.2018.1521785
3. The Backwards Turn Right in the Hindi Belt: Trajectories and Implications1 - Indian Politics &Policy, https://www.ippjournal.org/uploads/1/3/6/5/136597491/the_backwards_turn_right_in_the_hindi_belt.pdf
4. The 2022 State Elections in Uttar Pradesh and the RSS-isation of the BJP - Taylor & Francis, https://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/00856401.2023.2266289
5. Expanding the Vote Base in Uttar Pradesh: Understanding the RSS-BJP Combined Mobilization Strategies - OpenEdition Journals, https://journals.openedition.org/samaj/7238
6. Fielding Yogi from Gorakhpur will also help party maintain hold on other seats in region, BJP hopes - The Economic Times, https://m.economictimes.com/news/elections/assembly-elections/uttar-pradesh/fielding-yogi-from-gorakhpur-will-also-help-party-maintain-hold-on-other-seats-in-region-bjp-hopes/articleshow/89220808.cms
7. Schedule for General Elections 2014 - Ministry of External Affairs, https://www.mea.gov.in/Uploads/PublicationDocs/23192_Election_2014.pdf
8. The caste based mosaic of Indian politics - ResearchGate, https://www.researchgate.net/publication/281983117_The_caste_based_mosaic_of_Indian_politics
9. Only Something Original : Everyday Communalism in Uttar Pradesh | SabrangIndia, https://sabrangindia.in/only-something-original-everyday-communalism-uttar-pradesh/
10. Everyday Communalism: Riots in Contemporary Uttar PradeshRiots in Contemporary UttarPradesh,ResearchGate, https://www.researchgate.net/publication/332490336_Everyday_Communalism_Riots_in_Contemporary_Uttar_PradeshRiots_in_Contemporary_Uttar_Pradesh
11. Violence in Delhi Is Intended to Polarize as Well as to Teach a Lesson | Carnegie Endowment for International Peace, https://carnegieendowment.org/posts/2020/02/violence-in-delhi-is-intended-to-polarize-as-well-as-to-teach-a-lesson

12. Politics in Gorakhpur since the 1920s: the making of a safe 'Hindu' constituency, https://www.semanticscholar.org/paper/Politics-in-Gorakhpur-since-the-1920s%3A-the-making-a-Chaturvedi-Gellner/ac2ae866c009cb6b7b353359a89a03569ec48e13
13. Understanding Communal Violence in India: A Review of New Perspectives, http://www.socialchangeanddevelopment.in/downloads/july2020/paper-5.pdf
14. Caste politics in India with special reference to Uttar Pradesh - Semantic Scholar, https://pdfs.semanticscholar.org/cbcc/cb81d21da988bc5d01b0847f73598f8774bf.pdf
15. Demography | District Gorakhpur | India, , https://gorakhpur.nic.in/demography/
16. Demographic Changes and Population Growth in Gorakhpur District - Research Journal of Humanities and Social Sciences, https://www.rjhssonline.com/HTML_Papers/Research%20Journal%20of%20Humanities%20and%20Social%20Sciences__PID__2023-14-1-1.html
17. Decoding the caste and community equation of the last two phases of UP polls - India Today, https://www.indiatoday.in/news-analysis/story/up-polls-caste-and-community-equation-of-last-two-phases-1919354-2022-03-01
18. Gorakhpur: When the Elephant and Cycle Trampled the Lotus - CPPR, https://www.cppr.in/centre-for-comparative-studies/gorakhpur-when-the-elephant-and-cycle-trampled-the-lotus
19. Natural alliance of Ram Raj and Nishadraj, says Nishad Party's Sanjay Nishad - The Hindu,https://www.thehindu.com/elections/lok-sabha-2019/natural-alliance-of-ram-raj-and-nishadraj-says-nishad-partys-sanjay-nishad/article61565572.ece
20. Gorakhpur: a gazetteer(PPN668655909 - PHYS_0236 - fulltext-endless) - Digitalisierte Sammlungen der Staatsbibliothek zu Berlin, https://digital.staatsbibliothek-berlin.de/werkansicht?PPN=PPN668655909&PHYSID=PHYS_0236&view=fulltext-endless
21. Constituencies(PC / AC) | District Gorakhpur https://gorakhpur.nic.in/constituencies/
22. AC: All Candidates of BSP for 2012 - IndiaVotes, https://www.indiavotes.com/ac/allcabdidateparty?stateac=60&emid=220&party=1381
23. Gorakhpur 2024 lok sabha election news : Constituency profile, candidate information, voter turnout and polling date. - The Hindu, https://www.thehindu.com/election/uttarpradesh-gorakhpur-loksabha-constituency/
24. What have the reserved constituencies voted for? - 21 July 2014 - India Together, https://indiatogether.org/bjp-sweep-in-scheduled-caste-and-tribes-reserved-constituencies-2014-government
25. 4 - LIST OF SUCCESSFUL CANDIDATES - Election Commission of India, ,https://www.eci.gov.in/eci-backend/public/api/download?url=LMAhAK6sOPBp%2FNFF0iRfXbEB1EVSLT41NNLRjYNJJP1KivrUxbfqkDatmHy12e%2FzVx8fLfn2ReU7TfrqYobgIkrAJg6TGS7zQszzZhDDjIvYSZp4N37kshmQDV6%2FSqRvgmbaAc%2BHq5lwt28N%2FSOL0YL1ssN1JVJfMASbvZSp4V6cgK3pshjWkc%2FjvrcLC7KwQqBtaSiqCprZFXWF1lgNsQ%3D%3D
26. Disadvantaged groups, reservation, and dynastic politics (Chapter 6) - Democratic Dynasties - Cambridge University Press & Assessment, https://www.cambridge.org/core/books/democratic-dynasties/disadvantaged-groups-reservation-and-dynastic-politics/7EF7F7098DCE1B1847A78E9DBC1940BF
27. BJP appoints 70 district chiefs in Uttar Pradesh; OBCs, Brahmins dominate - The Hindu, https://www.thehindu.com/news/national/uttar-pradesh/bjp-appoints-70-district-chiefs-in-uttar-pradesh-obcs-brahmins-dominate/article69339094.ece
28. Nishad Party exits, big blow to SP-BSP - The Hindu, https://www.thehindu.com/elections/lok-sabha-2019/nishad-party-exits-big-blow-to-sp-bsp/article61566997.ece
29. 'NO POWER IN THE WORLD CAN STOP INDIA FROM REACHING ITS GOAL' - Bharatiya Janata Party, https://www.bjp.org/files/kamal-sandesh-documents/KS_ENG_Feb%202022_1_web.pdf